Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

केदारनाथ अग्रवाल का कृतित्व

डॉ. अंजना सिंह
गुरूद्वारा मोहल्ला, वार्ड नं 10
गुरूद्वारे के पास, अम्बाह
जिला मुरैना (म.प्र.) 476111

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिये समाज मे हुये परिवर्तनों के प्रभाव से वह अछूता नही रहता है, बल्कि उसका मन और मस्तिष्क उससे प्रभावित होते है।

समाज साहित्य को प्रभावित करता है और साहित्य समाज को। दोनो एक–दूसरे के पूरक होते है। उन्हे अलग नही किया जा सकता, और न ही ऐसा हो सकता है कि एक–दूसरे का एक–दूसरे पर प्रभाव न पड़े। अर्थात् समाज का साहित्य पर और साहित्य का समाज पर प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी है। साहित्य समाज का दर्पण होता है, जैसी समाज की स्थिति होगी साहित्य पर उसकी छवि दिखाई देंगी उसी तरह जैसा साहित्य होगा, उसका असर जनमानस पर वैसा ही पड़ेगा।

> ''केदारनाथ अग्रवाल के विषय मे जैसा कि पूर्व मे कहा गया है, हिन्दी के अन्य सभी कवियों की अपेक्षा वे अधिक सफल हुये और इसका कारण उनकी लोक–जीवन से निकटता, यथार्थ भेदिनी दृष्टि तथा उनका महान जनवादी दृष्टिकोण है।''[1]

तत्कालीन समय मे हुये राजनैतिक–आर्थिक परिवर्तनो ने भारत के पारम्परिक ढांचे को अनेक दिशाओ में गतिशील किया, जिनमे भौगोलिक दृष्टि से नगरीकरण, धार्मिक दृष्टि से लौकिकीकरण (सेक्यूलराइजेशन) तथा वैचारिक दृष्टि से पश्चिमीकरण प्रधान है।

हिन्दी काव्य मे केदारनाथ अग्रवाल के महत्त्व के प्रति सजग पाठकों का ध्यान बराबर रहा है। भारत की जनतांत्रिक शक्तियों का हित न होता था, बल्कि साम्राज्यवादी सांस्कृतिक आक्रमण को बल मिलता था। यह आक्रमण सन् 1947 के बाद तेज होते–होते अब इस स्थिति मे पहुॅच गया है कि अनेक 'प्रगतिशील' विचारक और कवि साम्राज्यवादी संस्थाओं द्वारा संचालित कार्यक्रमों मे बेझिझक हिस्सा लेते है और अमरीका जैसे देशों की 'सांस्कृतिक' यात्रा करते है यही लोग पिछले बीस–पच्चीस साल से साहित्यिक चर्चा का मुख्य केन्द्र बने रहे है। ऐसे विचारक जिन कवियों पर लिखने से सबसे अधिक कतराते है, उनमे केदारनाथ अग्रवाल का नाम सर्वोपरि है।

केदार जी को 'कमासिन' के प्रति, यहॉ के लोगों के प्रति आत्मीयता है, यह आत्मीयता उनकी कविताओं मे सस्वर, गूंजती दिखाई देती है। जनवादी कवि होने के कारण उनके काव्य मे, गद्य मे सभी जगह जनता की आवाज व्याप्त है। आम आदमी की पीड़ा, कष्ट, मजदूर और किसान की व्यथा तथा इसके लिये उत्तरदायी शासन व्यवस्था और सरकार के प्रति आक्रोश व्याप्त है। भारत स्वतंत्र होने के बाद भी हरिजनों पर अत्याचार किये जाते थे, ये हरिजन अधिकतर खेतिहर मजदूर ही होते थे। सन् 1946 जब यह उचित मजदूरी के लिये लड़ रहे थे, केदार जी ने इस संघर्ष का सीधा चित्रण किया है:

> ''डंका बजा गॉव के भीतर
> सब चमार हो गये इकट्ठा
> एक उठा दहाड़कर,

हम पचास है,
मगर हाथ सौ फौलादी है।
सौ हाथों के एका का बल बहुत बड़ा है
हम पहाड़ को भी उखाड़ कर रख सकते है।''[2]

डॉ0 रामविलास शर्मा की स्थापना है कि ''केदार की कविता, कथाकार प्रेमचंद की विरासत का अन्य विद्या में, क्रांतिकारी विकास है।'' प्रेमचंद की विरासत का अर्थ है दरबारी साहित्यशास्त्र के विरूद्ध जनवादी साहित्य की परम्परा, छायावाद की अतिशय काल्पनिकता के विपरीत वस्तुवादी कलादृष्टि, साम्राज्यवाद–विरोधी, सामन्तवाद–विरोधी राष्ट्रीय भावबोध और शोषण दमन के विरूद्ध–पूँजीवादी, महाजनी सभ्यता के विरूद्ध–नया स्वाधीनता प्रेमी मानववाद। केदारनाथ अग्रवाल इस परम्परा से जुड़े ही नही, उन्होने उसका क्रांतिकारी विकास भी किया है। प्रेमचंद की इस राष्ट्रीय और जनवादी विरासत से केदार का संबंध डॉ0 शिवकुमार मिश्र ने इन शब्दों में रेखांकित किया है, ''केदार के बुन्देलखण्ड के साधारण जनों के चित्रण मे एक आत्मीयता, एक अपनत्व है, कुछ वैसा ही, जैसा माधव और घीसू के प्रति प्रेमचंद का रहा होगा।'' जनता से अगाध प्रेम और उसकी दुर्बलताओ के प्रति निर्ममता, यह द्वंद्वात्मक विवेक प्रेमचंद से जोड़ने वाला है। अपने संस्मरण मे अजित पुष्कल ने भी अनुभव किया, ''संवेदना के धरातल पर केदार की कविता प्रेमचंद की कहानी के नजदीक लगती है।''[3]

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य के उतार–चढ़ाव का संबंध सिर्फ उनके विकास की अवस्थाओं से नही, बल्कि भारत की सामाजिक परिस्थितियों और प्रगतिशील आंदोलन के इतिहास से भी है। केदार पर अपने लेख मे शमशेर बहादुर सिंह ने लिखा है, ''प्रगतिशील साहित्य आंदोलन का विरोध अंग्रजी और उनके उत्तराधिकारी पूँजीवादी शासक वर्ग के लिये स्वाभाविक ही था और है।''[4]

सन् 1947 के बाद दे''ा के शासन की बागडोर संभालने वालो ने अंग्रजी विधान को ध्वस्त करके साधारण भारतीय को राहत दी या नही, इन सभी सवालों का बहुत गहरा संबंध स्वाधीन भारत की प्रगति से है। केदार के काव्य मे इन सवालों का बहुत गहरा संबंध स्वाधीन भारत की प्रगति से है। केदार के काव्य मे इन सवालों के बारे मे जितनी सामग्री विद्यमान है, उतनी संभवतः किसी अन्य कवि के यहॉ नही है।

स्वाधीनता की आव''यकता धनी वर्ग को उतनी नही है, जितनी भारत के साधारण नागरिकों को है। इसलिये आजादी के सकर्मक आकांक्षा केदार के यहॉ अत्यंत निम्न या साधारण समझे जाने वाले पात्रों के माध्यम से ही व्यक्त होती है। भारत की गरीब जनता के लिये आजादी की लड़ाई सविनय अवज्ञा और गोलमेज सम्मेलनों तक सीमित न थी, उसकी लड़ाई अंग्रेजी दमन के विरूद्ध सक्रिय संघर्ष और बलिदान की लड़ाई थी। केदार जनता की इस लड़ाई को पहचानते है, इसलिये किसान बनकर 'खूनी अंगारे' बोते है। (गुलमेंहदी, पृ0 67) इस दौर की कविताओं मे क्रांतिकारी स्वधीनता संग्राम की आकांक्षा केदार के स्वर की मूल पहचान है।

सन् 1946 का जनउभार कितनी शक्ति से आगे बढ़ रहा था उसे देखकर आजादी का सपना पूरा होता हुआ अनुभव करना कितना बाजिव था, इसका विस्तृत अध्ययन डॉ0 रामविलास शर्मा के लेख मे किया जा सकता है। इस आंदोलन की वस्तुगत प्रगति पर देश का भविष्य निर्भर था। लेकिन कांग्रेस इस जन–उभार का दबाब डालकर अंग्रेजो से समझौता किया, सांप्रदायिकता से सॉठ–गॉठ किया और जनता के ध्येय से दगा किया। बदले मे जनता को अहिंसा की सीख और आजादी का दिलासा देते रहें। केदार ने इस परिस्थिति का मार्मिक वर्णन अपनी अनेक कविताओ में किया है।

''आफत ही आफत सब आई
लेकिन दिल्ली से आजादी
अब–तक अब–तक हाय न आई
हाय न आयी!!''[5]

कांग्रेसी नेता लंदन गये, लौट आयें, भारत की संघर्षरत जनता की ओर से केदार ने पूछा–

''बोलौ आजादी लायें?
नकली मिली है कि असली मिली है?
कितनी दलाली मे कितना मिली है?....''[6]

कांग्रेस और अंग्रेज की मिली भगत और जनता के ध्येय से कांग्रेसी नेताओ की अहिंसक धोखेवाजी का केदार की बहुत–सी रचनाओं में भंडाफोड़ किया गया है।

''लंदन मे बिक गया नेता, हाथ कटाकर आया
...अर्थ नीति में, राजनीति मे गहरा गोता खाया
जनवादी भारत का उसने सब कुछ वहॉ गँवाया।''[7]

1946 के जन उभार के समय का जो"ा भरा स्वर यहॉ मर्मभेदी व्यंग्य मे ढलकर प्रकट हुआ है। केदारनाथ अग्रवाल की प्रगतिशीलता का मूर्त आधार है भारत की श्रमजीवी जनता। मार्क्सवादी दर्शन ने जनता के प्रति उनकी ममता को प्रगाढ किया, जनता के संघर्ष मे आस्था और उसके भविष्य मे विश्वास उत्पन्न किया। इसलिये वे अंग्रेजी व कांग्रेसी शासकों की आलोचना करते हुये जनता पर होने वाले पाशविक दमन और जनता के कठिन संघर्षो को सामने रखते है। इस कारण उनकी राजनैतिक कविताऐं जहॉ प्रचार के उद्देश्य से लिखी गई है, वहॉ भी अमूर्त या सिद्धांत–कथन मात्र होकर नही रह जाती। लेकिन सबसे बड़ा परिणाम यह हुआ कि स्वधीनता–प्राप्ति के बाद जहॉ बहुत से प्रगतिशील लेखक दमन से डरकर या रामराज के लुभावने सपनों मे बहकर कांग्रेसी 'नवनिर्माण' मे हाथ बंटाने चले गये, वहा केदार उन लेखको मे थे जो इस सारी परिस्थिति के प्रति जनता की ओर से, जनता को संबोधित करते हुये अपनी आवाज बुलन्द कर रहे थे।

यह तथ्य है कि किसी भी युग के किसी भी साहित्यकार का साहित्य अपने समय के सामाजिक यथार्थ से प्रभावित हुये बिना रह नही सकता। इसी के संदर्भ मे कुछ साहित्यकारों के विचार अग्र लिखित है:

1 शिवमंगल सिंह 'सुमन' :
''हमारे बदलते हुये समाज संबंधो तथा पुराने या अब तक के समाज संबंधी चेतना से कलाकार मस्तिष्क मे जो तनातनी होती है, कला उसी की अभिव्यक्ति है।''[8]

2 श्री अंचल :
''प्रगति का जीवन स्त्रोत सदैव संघर्ष मे रह।''[9]

3 श्री केदारनाथ अग्रवाल :
''सार्वजनिक (सार्वजनीन) जीवन की प्राप्ति और उसकी अभिव्यक्ति ही सच्चे और उत्तम काव्य साहित्य का गुण है।''[10]

मेरे विचार सामाजिक संघर्ष मे आधुनिक साहित्य जितना तपेगा, उतना ही उसमें निखार आयेगा जैसे आग मे तपकर ही सोना निखरता है, वैसे यथार्थ की आग मे तपकर ही रचनाकार की लेखनी से वास्तविकता झलकेग, जो सम्पूर्ण के घेरे से निकलकर सम्पूर्ण समाज और सम्पूर्ण जीवन को अपनी रचना का विषय बनाना चाहिए।

सन् 1946 मे उचित मजदूरी के लिये लड़ रह भूमिहीन खेत–मजदूरों का वर्णन करते हुये लिखा है :

'' जमींदार यह अन्यायी है
कामकाज सब करवाता है
पर पैसे देता है छः ही।''[11]

केदार जी के काव्य मे हर वर्ग की स्थिति पर रचना मिलती है। समाज का सभी दशाओं का चित्रण मिलता है चाहे वह खेतिहर मजदूर हो, या संघर्षरत भारतीय। चाहे वह विपन्नताग्रस्त ग्रामीण औरतें हों या दलित–शोषित नारी की मार्मिक स्थिति। ग्रामीण जीवन के यथार्थ चित्रण के साथ–साथ ही उन्होने नागरिक

Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

जीवन के विभिन्नों अंगो, रूपों, उसकी विकृतियों, असंगतियो का विस्तृत यथार्थ वर्णन अपनी रचनाओं मे किया है।

केदार जी वकील थे, इसलिये कचहरी से उनका घनिष्ट संबंध था, न्याय के नाटक को रोज देखते थे, न्याय व्यवस्था की आलोचना उनके काव्य मे प्रचुर मात्रा मे दिखाई देती है :

सच के पॉव उखड़ते
झूठ के जब झंडे गड़ते
सच जीते तो कैसे
न्याय मिले तो कैसे ?[12]

न्याय व्यवस्था का एक साधन पुलिस विभाग भी है, किंतु यहॉ न्याय के नाम पर निर्बल और असहाय को परेशान किया जाता है तथा मुजरिम पैसे के बल पर साफ निकल जाते है जिससे न्याय व्यवस्था मजाक बनकर रह गई है केदार जी ने इसकी तीव्र आलोचना की हैं :

कानून हो रहा
इंसाफ के खिलाफ
हथियार [13]

केदार जी के काव्य मे लोक–संस्कृति, आंचलिक–जीवन, नारी–चित्रण, ग्रामीण व नगरीय विषमताऐं, प्रकृति–चित्रण आदि सभी का अपना स्थान है। इनकी रचनाओं मे पूरे देश का चित्रण मिलता हैं। उन्होने एक स्तर पर अपने देश में व्याप्त प्रत्येक स्थिति का वर्णन किया है तो दूसरी ओर राष्ट्रो की संकीर्ण सीमाओं को पार उभरने वाला अंतर्राष्ट्रीय यथार्थ भी।

देश के भीतर दहन और दाह है
अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, वाह–वाह है।[14]

केदार जी ने जीवन के विभिन्न पहलुओं का यथार्थ चित्रण ही नही किया, बल्कि उसकी जटिल गहराईओं का भी संधान किया है और सूक्ष्म स्तरों का उद्घाटन भी। सामाजिक यथार्थ उनके साहित्य का मुख्य विषय रहा है और उनके साहित्य मे सामाजिक यथार्थ के विभिन्न चित्र उपस्थित हुये है। पतिया का चरित्र और मोहिनी का चरित्र सामाजिक यथार्थ का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

सामाजिक, राजनीतिक एवं यथार्थ वाद का प्रभाव

केदार जी एक जागरूक, भावुक और संवेदनशील नागरिक रहे है इसीलिये उनके साहित्य मे युगीन परिस्थितियों की झलक दिखाई देती है।प्रत्येक रचनाकार का समाज पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि वह समाज का एक अंग है। केदार जी के समय मे युग करवट ले रहा था। सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियॉ तेजी से बदल रही थी। उसी समय केदार जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम जनमानस को जागरूक करने का बीडा उठाया और गुलामी की जंजीरो को तोड़ने वाली सजग पहरियो को स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिक के रूप मे जागरूक किया जिसमें प्राचीन रूढ़ियों को तोड़ने व नवीन विचारधारा को अपनाने का कार्य किया गया।

जितना जो कहा भी
सुधियों ने मुझसे, छवियों ने मुझसे
स्वपन भरी अखियों ने मुझसे
मैनें वह सभी दिया
कविता को तुमको। [15]

जनता समाज की रूढ़ियों को तोड़कर आगे बढ़ रही थी। इन सभी परिस्थितियो का प्रभाव केदार साहित्य मे स्पष्ट दिखाई देता है। जिसमे स्वतंत्रता और समानता के लिये जाति–धर्म की रूढ़ियों को रोकने के लिये आर्थिक विषमता के लिये उनकी लेखनी निरंतर चलती रही है। केदार जी की रचनाओं ने समाज

Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

को सोचने की नवीन दिशा दी है। उनकी संवेदना और विचारो को विकसित किया है उनके अनेको भ्रमों को तोड़ा है स्वच्छ और प्रगतिशील विचारों को प्रदान किया है।

केदार जी की कविताऐं उनके अनुभव की उपज है। केदार की काफी राजनीतिक कविताऐं ऐसी है जो प्रचारात्मक है, उनका संबंध जन–आंदोलन से है और वे आंदोलन के लिये ही लिखी गई है। आंदोलन चल रहा है तो ठीक, नही चल रहा तो चलना चाहिये। '' इस दृष्टि से ऐसी सफल राजनीतिक पत्रकारिता के अंतर्गत है। पत्रकारिता कलापूर्ण हो सकती है, ठस और नीरस भी। कविता मे सरस, कलापूर्ण राजनीतिक पत्रकारिता के नमूने या तो केदार ने दिये है या फिर नागार्जुन ने। दोनो कवि अपने जनपदीय अंचलों से बहुत गहराई से जुड़े हुये है। जनता से सीधे बात करने की क्षमता उनमे अपूर्व है। लोग प्रचलित कविताओ के रूपो को अपनाते हुये वे अपनी अभिव्यक्ति की शैली को लोक रूचि के अनुरूप ढाले लेते है।''[16]

केदार जी एक क्रांतिकारी कवि है उनके साहित्य मे साहित्य जगत की प्राचीन परम्पराओं को तोड़कर नवीन संदर्भो मे काव्य व गद्य की रचना की है। राजनीतिक बदलाव के इस युग मे समाज एक नई दिशा की ओर अग्रसर हो रहा था परिणामस्वरूप सामाजिक और नैतिक मूल्य परिवर्तित हो रहे थे। इसलिये देश की सामाजिक और आर्थिक स्थिति सोचनीय थी। इन गंभीर परिस्थितियों मे एक जागरूक संवेदनशील साहित्यकार का दायितव और भी बढ़ जाता है जिसे केदार जी ने बखूबी निभाया है। देश मे उस समय बाल–विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, अशिक्षा, अनमेल विवाह, छुआछूत आदि का बोलवाला था। ऐसे मे राजाराममोहन राय, दयानंद सरस्वती जैसे अनेक समाज सुधारको ने इन बुराइयों को खत्म करने का प्रयास किया वही केदार जी जैसे जनवादी क्रांतिकारी कवियो ने भी अपनी रचनाओ के माध्यम से जनता को जाग्रत किया और देखा, जो अनुभव किया उसी को अपनी रचनाओं मे लिपिबद्ध कर दिया।

कविता बात कहने के लिये ढंग का एक लय मे सहज साधन है। कवि केदार ने अकेले हर पल मे इस लय को अपने से अलग नही होने दिया, इसी लय के मध्य कविता को जन्म दिया है :

उड़ि रहे बदिरा बरसि रहे बदरा
खेतियां का अँचरा परसि रहे बदरा
मोरे मन बसि रहे लसि रहे बदरा।[17]

अजित पुष्कल ने भी माना है कि ''संवेदना के धरातल पर केदार जी कविता प्रेमचंद की कहानी के नजदीक लगती है।[18]

केदार जी जनकवि है वह जनता के पक्षधर है, वह जमीन से जुड़े व्यक्ति है इसलिये निम्न वर्ग की पीड़ा, किसानों एवं आम–आदमियों की पीड़ा को उन्होने महसूस किया है। और इनके शोषण को देखकर उनका हृदय आक्रोश से भर गया जो उनकी रचनाओं मे दिखाई देता है उनकी निम्न पंक्तियों को पढ़कर पाठक प्रभावित हुये बिना नही रह सकता है।

बाप बेटा बेचता है
भूख से बेहाल होकर
धर्म धीरज प्राण खोकर
हो रही अनिरीति बर्बर
राष्ट्र सारा देखता है
बाप बेटा बेचता है।[19]

केदार जी का चिंतन बहुआयामी है, उनके लेखन मे गॉव–शहर, पूँजीपति–निर्धन वर्ग, राजनीति, न्याय–व्यवस्था आदि सभी का चित्रण मिलता है।

''केदार टिमटिमाती लालटेन नही, उगते सूरज के कवि है। यह सूरज मनुष्य के श्रम का सूरज है।'' जीवन की व्यवहारिक पहचान ही कवि का उद्देश्य रहा है। गद्य एवं पद्य

लेखनन मे इस यथार्थवादी पहचान के पात्रों को भी जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बना दिया है जो जीवन का एक चिरनिरंतन सत्य है।[20]

'रिश्वत' कविता मे कवि ने स्वीकार किया है कि जीवन मे आज व्यक्ति का व्यक्ति से मात्र रिश्वत का रिश्ता हैं। यह रिश्वत का हिस्सा व्यक्ति जीवन मे व्यवहारिक है। आज के लेन–देन की प्रथा मे भले ही कैसा ही काम क्यो न हो, रिश्वत का बोल–बाला है। आदमी की पहचान का एक बहुत बड़ा हिस्सा धन है। धन के आगे, सभी बातें फीकी–सी लगती है। रिश्वत, धन के आगे पीछे का सहज हिस्सा है, प्रत्येक व्यक्ति यदि काम (नौकरी) चाहता है तो उसे रिश्वत देनी पड़ती है। वर्तमान मे रिश्वत ने उपहार का भी रूप धारण कर लिया है।

जीवन की व्यवहारिक पहचान ही कवि का उद्देश्य रहा है गद्य एवं पद्य लेखन मे इस यथार्थवादी पहचान मे पात्रो को भी जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बना दिया है जो जीवन का चिरनिरंतन सत्य है।

क्या आगे, क्या पीछे
क्या ऊपर, क्या नीचे
सभी जगह के किस्मत
आज प्रमुख है रिश्वत।[21]

अतः यह कहा जा सकता है कि केदार जी रचनाऐं जनमानस की रचनाऐं है। उनका गद्य हो काव्य दोनो ही जनता की आवाज है। केदार जी इसे वक्त स्पष्ट वक्ता होने के कारण खरी–खोटी सुना देना, दो टूक बात कह देना केदार जी व्यक्तित्व का विशिष्ट गुण है। कहे केदार खरी–खरी से यह बात प्रमाणित होती है।

बिषय स्रोत

1. तदैव, विचार – रामेश्वर शर्मा, संपादक – डॉ0 रामचन्द्र मालवीय, पृ0 18
2. कहें केदार खरी–खरी : केदारनाथ अग्रवाल, पृ021
3. केदारनाथ अग्रवाल – संपादक अजय तिवारी, पृ011, परिमल प्रकाशन।
4. केदारनाथ अग्रवाल – संपादक अजय तिवारी, पृ011, परिमल प्रकाशन।
5. कहें केदार खरी–खरी, केदारनाथ अग्रवाल, पृ0 36
6. कहें केदार खरी–खरी, केदारनाथ अग्रवाल, पृ0 41
7. कहें केदार खरी–खरी, पृ0 52
8. जीवन के गान, पृ0 10
9. वे कविताऐं (भूमिका) लाल चूनर, पृ0 2
10. हंस, दिसम्बर 1947 पृ0 203
11. कहें केदार खरी–खरी : केदारनाथ अग्रवाल, पृ0 47
12. कहें केदार खरी–खरी : केदारनाथ अग्रवाल, पृ0 144–145
13. कहें केदार खरी–खरी : केदारनाथ अग्रवाल, पृ0 147
14. बोलें–बोल अबोल : केदारनाथ अग्रवाल, पृ0 38
15. बसंत मे प्रसन्न हुई पृथ्वी, केदारनाथ अग्रवाल, पृ0 146
16. केदारनाथ अग्रवाल, संपादक अजय तिवारी, पृ0 53
17. बसंत मे प्रसन्न हुई पृथ्वी, केदारनाथ अग्रवाल, पृ0 146
18. केदारनाथ अग्रवाल : संपादक अजय तिवारी, पृ0 11
19. गुलमेंहदी : केदारनाथ अग्रवाल, पृ0 24
20. केदारनाथ अग्रवाल : संपादक अजय तिवारी, पृ0 55
21. बसंत मे प्रसन्न हुई पृथ्वी, केदारनाथ अग्रवाल, पृ0 116